क्षितिज के उस पार

शरोवन

***

‘आकाश ने मंगनी टूटने पर क्या सोचा था और क्या नहीं? तथा उस पर क्या बीती होगी? कृति ने तब ये सब कुछ जानने की आवश्यकता ही नहीं समझी। फिर समझती भी कैसे? प्रेम पथ की यात्रा पर चलते हुये जब आंधी की हवायें अपनी टक्करें मारती हैं तो उसकी धुंध में आदमी अंधा तो होता ही है, साथ ही मन और मस्तिष्क से भी कमजोर पड़ जाता है।’

***

‘मुझे देख कर यूं मूंड क्यों खराब हो जाता है तुम्हारा? यदि इस नादान बच्ची से मुझे कोई लगाव है तो इसका कारण केवल ये है कि ये तुम्हारी लड़की है। मैं तो समझता था कि, किस्मत ने हमारे जीवन में कुछ दिनों की ज़ुदाई लिखी थी; मगर नहीं, अब तुम्हारी आंखों में अपने प्रति अलगाव और अरूचि के चिन्ह देख कर ऐसा लगता है कि तुम ऐसी स्वार्थी स्त्री हो कि जिसे अपनी ज़िद के आगे अपनी औलाद के भविष्य की भी कोई चिन्ता नहीं है। तुमने मेरी विवशता और मजबूर परिस्थितियों का भरपूर फायदा उठाया और अपने सारे सपने सच करने चाहे। अब ये और बात है कि जब तुम्हारे सपने साकार नहीं हो सके तो उसकी झुंझलाहट और गुस्सा मेरे साथ साथ इस नासमझ बच्ची पर भी उतारना चाहती हो? अब यदि तुम्हें मुझसे कोई शिकायत है और तुमको मेरा यहां आना कतई पसंद नहीं है तो मैं वायदा करता हूं कि आज के बाद फिर कभी भी तुम्हारी दहलीज़ पर कदम भी नहीं रखूंगा। लेकिन इतना याद रखना कि यदि मांगने वाले की झोली में देने वाला अगर देने के बजाय छेद कर देता है तो फिर उसमें कोई भी वस्तु नहीं ठहरती है। आज मैं तुमसे आरज़ू और मिन्नतें कर करके हार गया कि एक बार फिर अपने उस घर में वापस में आ जाओ जिसे केवल मैंने तुम्हारे ही लिये बनाया है। वह घर और बसेरा आज भी तुम्हारा इंतजार कर रहा है। आज तुम इनकार कर रही हो और मैं बुला रहा हूं, लेकिन कल

को जब तुम आना चाहोगी तो हो सकता है कि बहुत देर हो चुकी हो। तब तुम्हें न ये आकाश मिलेगा और ना ही उसका कोई साया। तब तक सब कुछ समाप्त हो चुका होगा। मेरा ठिकाना, मेरा अस्तित्व और तुम्हारी ज़िदों का दायरा भी।'

आकाश इतना सब कुछ एक ही सांस में कह कर चला गया तो कृति पल भर को अवाक् रह गई। आकाश के कहे हुये शब्दों की भरपूर मार ने जैसे उसके दिल और दिमाग दोनों ही पर हथोड़े से बरसा दिये थे। इस प्रकार कि उसे अपने जीवन के उन दिनों के प्रति सोचने पर विवश होना पड़ गया था कि जिनमें उसके अतीत का वह कड़वा और कसैला स्वाद था कि जिसके एक ही घूंट से उसके सारे तन बदन में जहर सा फैल जाता था।

आकाश उसकी बच्ची युक्ति को छोड़ कर और उपरोक्त सारा कुछ कह सुन कर चला गया तो क्षण भर को कृति सुन्न सी रह गई। उसकी समझ में नहीं आ सका कि वह क्या करे और क्या नहीं? वह जानती थी कि एक समय था कि वह जिस मार्ग पर वह चली थी, तब वह मार्ग और सफर आकाश ने ही आरंभ किया था। तब आकाश ने उसका हाथ सदा के लिये थामना चाहा था। उसके साथ दम्पत्ति जीवन में बंधने के लिये तब सारे प्रबन्ध भी हो गये थे। मगर ये और बात थी कि तब परिस्थितियों वश वह उससे जुड़ने से पूर्व ही अलग हो गई थी। फिर ऐसी स्थिति में उसने अपनी कोई भी गलती न मान कर सारा दोष आकाश के ही सिर पर मढ़ दिया था।उ उसी को तब उसने पूरी तरह से दोषी ठहराया था। लेकिन फिर भी आकाश ने तब उसको बहुत समझाना चाहा था, मगर वह अपनी ज़िद पर ही अड़ी रही थी और फिर अपनी मनमानी से आकाश के लाख तरह से समझाने के उपरान्त भी एक अलग मार्ग चुन लिया था। फिर उस मार्ग पर चलने का जो परिणाम सामने आया था, उसका प्रभाव युक्ति के रूप में ऐसा आकर्षण बन कर आया कि जिसने एक बार फिर आकाश को उसके जीवन में हलचल मचाने के लिये बाध्य कर दिया था। कृति के मन मस्तिष्क में यही सारे विचार जब भी आते थे, तब एक बिजली सी उसके सारे बदन में कौंध जाती थी। साथ ही जब भी आकाश उसके सामने पड़ता था तो जैसे पूरा तूफान ही उसके सामने हिला कर चला जाता था . . .'

सोचते सोचते कृति चुपचाप गंभीर बनी हुई रसोई में आई। चाहा कि लड़की को कुछ बना कर दे दे। वह भी स्कूल से आई थी। भूखी तो होगी ही। सो यही सोच कर वह मैगी का पैकिट निकाल

कर जैसे ही उसे खोलने को हुई तो युक्ति की महीन आवाज़ ने उसे चौंका दिया। वह उसके पीछे पीछे न जाने कब से आ गई थी। कृति को मालुम भी नहीं पड़ सका था।

'मम्मी! अंकल अब कभी भी नहीं आयेंगे क्या?'

युक्ति की महीन कोमल आवाज़ जैसे ही कृति के कानों से टकराई तो उसे लगा कि जैसे किसी ने अचानक ही उसके कानों में गर्म गर्म तेल डाल दिया है। हांलाकि, कृति अभी बच्ची ही थी। अपने दिमाग और अक्ल से उसने जो कुछ भी सोचा था, उसे अपनी मां के सामने बिना किसी भी झिझक के स्पष्ट कह दिया था। युक्ति ने तो समय और माहौल को देखते हुये जो कुछ भी विचारा था, उसे कह दिया था, मगर यही बात कृति के लिये बहुत कुछ सोचने पर विवश कर गई थी। अभी कुछ देर पूर्व ही तो आकाश उसके घर पर आया था और उसकी इकलौती बच्ची युक्ति को स्कूल से लाकर छोड़ गया था। इसके पश्चात जो कुछ भी हुआ था, उसी के आधार पर युक्ति ने अपनी मां से आकाश के लिये पूछा था। उसका विचार था कि वह जैसे फिर कभी भी उसके यहां नहीं आयेगा।

अपने मस्तिष्क और विचारों को झकझोरते हुये कृति ने एक बार फिर से युक्ति को निहारा। वह अभी भी जैसे हर पल अपनी मां के चेहरे के विचारों को पढ़ने का प्रयास कर रही थी। बच्ची की इस मुद्रा को देख कर कृति ने चुपचाप उसे गोद में उठा लिया और अपनी छाती से लगाते हुये वह उससे बोली कि,

'बेटी! जिसे आना ही होता तो वह पहले ही क्यों न आ गया होता?'

पता नहीं, युक्ति के बच्चे जैसे मन में ये बात समझ में आई भी या नहीं? पर इतना तो था कि मां की गोद में उठाने और उसकी बात का उत्तर मिलने पर युक्ति को एक संतोष अवश्य ही मिल गया था।

इसके पश्चात कृति ने जल्दी से युक्ति के लिये मैगी का पैकिट खोला और शीघ्र ही बना कर उसे खाने को दे दिया। युक्ति जब उसे खाने में लीन हो गई तो कृति स्वत ही उसकी हरेक मुद्रा को निहारने लगी। बच्ची के हाव भाव और प्यार में उसे थोड़ा बहुत संतोष तो मिला, मगर फिर भी इस संतोष में उसे अपने अतीत के भूले बिसरे चित्र नज़र आने लगे। और ये सच भी था। युक्ति तो उसके अतीत की हर कड़वी यादों का ऐसा सिलसिला थी कि जो शुरू तो हो गया था मगर उसका अंतिम सिरा कहीं भी नज़र नहीं आता था। जीवन के कितने ही आयामों से वह गुज़र कर

आई थी परन्तु फिर भी ऐसा लगता था कि जैसे वह जहां से चली थी, वहीं पर आज भी खड़ी हुई अकेली और तन्हा रह गई है।

यादों की सोच में विचरते हुये कृति को वह दिन याद आया, जब कि काफी दिनों से लगातार हुई जा रही भेंटो के उपरान्त आकाश ने एक दिन उससे कहा था कि,

'कृति जी, मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूं?'

'जी! कहिये?'

कृति ने हांमी दी तो आकाश उसकी आंखों में झांकते हुये बोला था कि,

'पता नहीं, आप मेरी बात को सुन कर मेरे बारे में न जाने क्या विचार करें। पर मैं बहुत ही स्पष्टवादी व्यक्ति हूं; हो सकता है कि, जो कुछ मैं कहना चाह रहा हूं, उसे आप पहले ही से समझ भी रही हों?'

'मैं यदि समझ भी रही हूं, फिर भी आपको कहना तो चाहिये ही।'

कृति की इस बात पर आकाश तब उससे तुरन्त ही बोला था कि,

'कृति जी, मैं आपसे विवाह करना चाहता हूं।'

'!!'

आकाश के कथन पर तब कृति चौंकी तो नहीं थी, पर उसके बदन में एक सिहरन अवश्य ही हो गई थी। तब बड़ी देर की खामोशी के पश्चात कृति ने उससे कहा था कि,

'अपने मामा और पापा को मेरे घर भेजिये, ताकि वे कायदे से मेरा हाथ अपने लड़के के लिये मांग सकें।'

फिर, इसके बाद सारा काम तौर तरीके से ही हुआ। आकाश और कृति के मां और पिता दोनों ही ने उनका रिश्ता तय कर दिया और तुरन्त ही मंगनी की रस्म भी पूरी हो गई। इसके साथ ही जब विवाह की बात आई तो उसकी भी तारीख मंगनी के चार महीनों के पश्चात तय कर दी गई। फिर दोनों तरफ से विवाह की तैयारियां भी होने लगीं थीं।

तब उन दिनों कृति भारतीय विदेश विभाग के पास पोर्ट कार्यालय में काम करती थी और आकाश एक विदेशी कम्पनी में इंजीनीयर के पद पर कार्यरत् था। दोनों की अच्छी आय थी। विवाह के पश्चात भी दोनों ही ने अपनी अपनी नौकरी जारी रखना तय कर लिया था। चूंकि, विवाह भी एक प्रकार से दोनों ही की इच्च्छानुसार और मनपसंद से हो रहा था, सो दोनों ही प्रसन्न भी थे। मगर इस प्रसन्नता में एका एक ताला तब लग गया जब कि एक दिन अचानक से आकाश की नौकरी जाती रही। नौकरी जाने का कारण विदेशी कम्पनी में लगातार घाटा आते रहना ही था। इस कारण कम्पनी बंद कर दी गई थी।

सो, इस प्रकार जब नौकरी नहीं रही तो आकाश के विवाह के सपने भी धूमिल होते देर नहीं लगी। और ये स्वभाविक भी था कि जब रहने और खाने का ठिकाना ही नहीं हो तो सपने बुनने की बात ही कहां हो सकती थी। आकाश जहां नौकरी करता था, वह एक बड़ा शहर था। भारत की राजधानी दिल्ली में उसकी कम्पनी की मुख्य शाखा थी। सुविधा के लिये उसे अच्छा खासा फ्लैट मिला हुआ था। आने जाने के लिये कार भी मिली हुई थी। मगर जब नौकरी नहीं रही तो फिर ये समस्त सुविधायें जाते देर भी नहीं लगी। तब ऐसे में उसे न केवल शहर ही छोड़ना पड़ा, बल्कि विवश होकर अपने पैतृक घर जो कि एक छोटे से कस्बे में था, में भी लौटना पड़ा। इसके साथ ही जब तक उसे कोई दूसरी नौकरी नहीं मिलती तब तक के लिये विवाह भी स्थिगत कर दिया गया था। इस प्रकार आकाश की नौकरी क्या गई, उसे लगा था कि जैसे उसके हाथों से उसके जीवन की सारी खुशियां ही सरक गईं हैं। उसकी .जिन्दगी के समस्त बनाये हुये सपनों के घरौंदे पलक झपकते ही ढह गये। फिर भी इतना सब कुछ होने पर भी उसने हिम्मत नहीं हारी थी। जैसे तैसे खुद को समझाया। संतोष किया और साथ ही दूसरी नौकरी की तलाश भी करने लगा। इन दिनों उसने कृति से व्यक्तिगत बात भी की थी। पत्रों के द्वारा भी उसे सारी अचानक से आई हुई परिस्थिति से संघर्ष करने को बल दिया था। कृति ने भी आरंभ में समस्त बदली हुई परिस्थिति को सहज ही लिया था और चुपचाप जीवन के नये प्रकाश के आने की प्रतीक्षा करने लगी। यही सोच कर कि जब भी आकाश को कोई दूसरी नौकरी मिलेगी और सब कुछ सामान्य और सुव्यवस्थित हो जायेगा तभी विवाह की नई तिथि भी रख ली जायेगी। मगर हुआ उसकी सोचों के विपरीत ही; ऐसे नये प्रकाश का सूर्य इतना शीघ्र उदय नहीं हो सका कि जितना जल्दी वह सोचे बैठी थी। आकाश को नौकरी ढूंढते हुये महीनों गुज़र गये। इसके साथ ही समय की परिस्थितियों ने एक और भी करवट ले ली। आकाश को नौकरी भी मिली नहीं। बात कोई बनी नहीं। साथ ही एक दिन कृति के पिता भी अचानक से चल बसे तो वह भी एक प्रकार से अकेली ही रह गई। उसका एक बड़ा भाई और था जो पहले ही से विवाहित था। उसका साया कृति के सिर पर था तो अवश्य ही पर वह उसके पिता की कमी को तो पूरा नहीं कर सकता था। ऐसे में

कृति ने सोचा था कि सारी परिस्थिति को सोचते और महसूस करते हुये अब आकाश किसी भी प्रकार से उससे बाकायदा शादी करके उसे अपने घर ले आयेगा। मगर ऐसा भी नहीं हो सका। कृति के मन में बसी हुई सारी धारणायें आकाश के प्रति जमी हुई अविश्वास की ज़रा सी गर्मी पाते ही किसी मोम के बनाये हुये फूलों के समान पिघल गईं। आकाश की अपनी मजबूरियां थीं। वह पूर्णत बेराजगार था और एक प्रकार से अपने बूढे मां बाप के ऊपर ही निर्भर था। वह अपनी नौकरी के लिये कोशिश तो कर ही रहा था, परन्तु इस कोशिश में कृति के सामने खड़ी हुई समस्या तो हल नहीं हो सकती थी। सो इस प्रकार कृति सोच रही थी कि मंगनी की रसम पूरी होने के पश्चात अब एक प्रकार से आकाश ही उसका रहा बचा सहारा था। वह अपनी होने वाली पत्नी का ख्याल तो रखेगा ही। साथ ही दूसरी ओर आकाश सोचे बैठा था कि जैसे ही उसको जैसी भी नौकरी मिलेगी, वह वैसे ही कृति से विवाह करके उसे अपने घर ले आयेगा। मगर दोनों में से कोई भी बात नहीं बन सकी। कृति के सोचे हुये विचार केवल धारणा बन कर रह गये। आकाश बेरोजगार ही बना रहा।

इसी उहापोह में समय इतनी तीव्रता से गुज़रा कि किसी को कुछ आभास भी नहीं हो सका। लगभग दो वर्ष बीतने को आये और आकाश अपनी नौकरी के लिये संघर्ष ही करता रहा। इस बीच कृति से उसकी कभी कभार पत्रों के द्वारा बात अवश्य हो जाती थी। कृति के हरेक पत्र में उसके लिये एक ही बात रहती थी कि नौकरी का क्या हुआ? फिर जब आकाश उसे उत्तर लिख देता था तो केवल भविष्य की घोर निराशा के अतिरिक्त कृति को कुछ भी नहीं प्राप्त हो पाता था।

इन्हीं दिनों जो सबसे असहनीय बात कृति के लिये घटी वह यही रही कि आकाश ने अपना विवाह न करके अपनी छोटी बहन का विवाह पहले कर दिया। छोटी बहन का विवाह करने की भी विवशता आकाश के सामने जो आई थी, वह यही थी कि उसकी बहन अपनी मर्जी से अपनी पसंद के लड़के से कोर्ट में जाकर शादी करे ले रही थी। यूं सारे समाज में उसके प्रेम प्रसंगो के चर्चे तो प्रचलित थे ही, साथ ही जब उसके परिवार वालों ने जब थोड़े समय के पश्चात धैर्य से उसका विवाह करने की उसको सलाह दी तो उसने कोर्ट में अपना विवाह करने की बात कह दी थी। सो सारा परिवार कहीं किसी बदनामी का शिकार न हो जाये आकाश और उसके पिता को किसी भी प्रकार से साधारण तौर पर उसका विवाह कर देना पड़ गया था। और विवाह भी ऐसा कि जिसमें कृति को खबर तक नहीं लगने दी थी। बस यही बात कृति के दिल और दिमाग में अंदर तक बींथ गई। उसने सोचा था कि, जिस युवक को अपनी होने वाली पत्नी के अकेलेपन से कहीं अधिक अपने परिवारजनों की परवा है वह उसे जीवन में क्या सुख दे पायेगा? यहीं से कृति के विचारों में

एक परिवर्तन आ गया। उसकी आकाश के प्रति सारी धारणायें ही बदल गईं। उसे उसमें कमियां ही नहीं कमजोरियां भी नज़र आने लगीं। उसे महसूस होने लगा कि एक बार फिर वह अपनी ज़िन्दगी के सफर के उस आयाम पर आकर खड़ी हो चुकी है, जहां से कभी उसके लिये तन्हाईयों और सूनेपन का आरंभ हुआ था। आकाश के प्रति सजाई हुई उसकी सारी आस्थायें हिलीं ही नहीं बल्कि उनमें उसे धांधली भी नज़र आने लगी। उसका दिल टूटा तो था ही, साथ ही भविष्य के प्रति उदासीन भी हो गया। उसके अंदर एक ऐसे मनुष्य के विचारों के प्रति संदेह और स्वार्थ के बादल घिरते हुये प्रतीत होने लगे कि जिसने खुद एक दिन अपने प्यार का दीपक लेकर उससे प्रज्वलित करने की आरज़ू की थी।

सो इस प्रकार से अपने मन के कोने में दिन व दिन बढ़ती हुई निराशाओं और उदासीनताओं का परिणाम ये हुआ कि आकाश के प्रति उसने सोचना ही बंद कर दिया। वह भूल गई कि कभी उसने आकाश का हाथ भी पकड़ा था। भूल गई कि कभी किसी आकाश ने उसके घरौंदे पर अपनी छाया करते रहने का वादा भी किया था। आकाश के प्रति इस प्रकार पनपते हुये अलगाव और अरूचि का सिलसिला तब और भी अधिक तीव्र हो गया जब कि एक दिन अचानक से उसके चेहरे पर बैठी हुई उदासीनता और मायूसी का लाभ उठाते हुये उसके साथ काम करने वाले एक अन्य गैर मसीही युवक क्षितिज ने उसके सामने अपने प्रेम की आरती अर्पित कर दी। इस प्रकार से ठहरे हुये जीवन पथ की राहों पर एक तन्हा यात्री के समान जब उसे क्षितिज किसी हमसफर के समान प्रतीत हुआ तो भी आरंभ में कृति कोई ठोस निर्णय नहीं ले सकी। ऐसा जटिल निर्णय न ले सकने का सबसे बड़ा कारण आकाश के साथ उसकी सगाई हो जाना ही था। विवाह नहीं हो सका था, तो क्या मन और आत्मा की भावनाओं में कहीं न कहीं आकाश का प्रतिबिम्ब तो उपस्थित था ही। मन में ठहरे हुये आकाश के इस चित्र को वह मिटा तो नहीं पा रही थी, मगर फिर भी उस पर जीवन की कुम्लाही हुई निराशाओं की धूल ने वहां जमना अवश्य आरंभ कर दिया था।

फिर जब एक दिन उसकी ज़िन्दगी की सजाई हुई कमसिन हसरतों पर क्षितिज के नवनिर्मित प्यार के अंकुर तेजी से फूटने लगे तो फिर उसने अपने जीवन का वह सबसे महत्वपूर्ण निर्णय ले लिया कि जिसमें उसको एक बार फिर नये सिरे से एक नये प्रेम पथ की यात्रा के लिये तैयार होना था। उसके बदले हुये प्यार की ये ऐसी राह थी कि जिसमें अतीत के सफर पर चलते हुये मार्ग तो बदलना ही था, साथ ही अपने असफल प्रेम की आहुति भी देनी थी। ये काम इतना

आसान तो नहीं था, मगर जब क्षितिज ने दूर से ही अपने प्यार की मंजिल का सुनहरा चित्र दिखाया तो उसके मन और आत्मा में साहस के बादल स्वत ही उड़ने लगे।

क्षितिज चूंकि एक गैर मसीही युवक था, और उसके साथ ही काम भी करता था और भविष्य में उसकी विदेश जाने की भी योजना थी। मगर इतना सब कुछ होने के पश्चात भी धार्मिक संस्कारों की दीवार खड़ी होने के कारण उनका मिलन मसीही और गैर मसीही, किसी भी रीति से नहीं हो सकता था। ऐसा करने के लिये किसी एक को अपनी धार्मिक आस्थाओं का बलिदान करना अति आवश्यक था।

इन्हीं दिनों जब क्षितिज का विदेश जाने का सारा काम पक्का हो गया तो कृति को भी विदेश ले जाने का एक ही उपाय उसके सामने रह गया था। कृति को बाकायदा उसकी पत्नी बनना था। सो इस प्रकार समय की आवश्यकता के तहत कृति क्षितिज के साथ कानूनी तौर पर उससे विवाह करके उसकी पत्नी बन गई। दोनों ने कोर्ट में जाकर विवाह कर लिया और इस विवाह के ठीक तीन दिन पहले ही कृति ने अपनी मंगनी की अंगूठी उतार कर आकाश को डाक से वापस भेज दी। इसके साथ ही उसके प्रति वर्षों से बसी हुई अविश्वास, अनिश्चय और निराशा की दास्तां भी लिख दी।

आकाश ने मंगनी टूटने पर क्या सोचा था और क्या नहीं? तथा उस पर क्या बीती होगी? कृति ने तब ये सब कुछ जानने की आवश्यकता ही नहीं समझी। फिर समझती भी कैसे? प्रेम पथ की यात्रा पर चलते हुये जब आंधी की हवायें अपनी टक्करें मारती हैं तो उसकी धुंध में आदमी अंधा तो होता ही है, साथ ही मन और मस्तिष्क से भी कमजोर पड़ जाता है। तब इस प्रकार कृति क्षितिज से विवाह करके उसके साथ ही रहने लगी। अब दोनों पति और पत्नी थे। कानून और समाज दोनों ही की दृष्टि में, बगैर इस बात के सोचे हुये कि पति पत्नी के आंगन में यहोवा परमेश्वर की स्तुति की जाये या फिर ओम जय जगदीश हरे का कीर्तन गाया जाये? दो विभिन्न पथ के दो ऐसे राही कि जो विभिन्न प्रकार की धार्मिक आस्थाओं के होते हुये भी एक ऐसे प्यार के घरौंदे में बसने का प्रयत्न कर रहे थे, जिसे बनाने, सजाने और बसाने की इज़ाजत ना तो परमेश्वर से प्राप्त हुई थी, और ना ही मनुष्यों की सामाजिक अदालत से।

विवाह के तीन माह के पश्चात ही एक दिन क्षितिज विदेश चला गया। कृति को ये विश्वास दिला कर कि एक दिन समय आने पर वह उसको भी बुला लेगा और साथ में छोड़ गया उसकी कोख़ में पनपती और पलती हुई अपने प्यार के वादों की वह निशानी जो एक दिन कृति और क्षितिज दोनों ही के जज़बाती और अधूरे प्रेम की युक्ति के रूप में ऐसी जन्मी कि जिसकी योजना की नींव मात्र प्यार की खोखली हवाओं में की गई थी। जन्म के समय आने तक, जब तक युक्ति का जन्म हुआ, उससे पहले और उसके बाद भी, क्षितिज ना तो कभी लौट कर भारत वापस आया और ना ही उसने कृति को अपने पास बुलाया। उसे जो करना था वह उसने कर लिया था, और शायद उसके करने का मकसद भी इतना ही भर था? युक्ति की शुरूआत से लेकर उसके जन्म तक कृति के लिये ये घोर आघात् ही था। ऐसा सदमा कि जिसमें फिर एक बार किसी ने उसके चमन में अपने प्यार के पौधे लगा कर सारी जिन्दगी के कंटीले कांटे भर दिये थे। दो बार उसके प्यार का पथ अधूरा रह गया था। दो बार ही उसके प्रेम के कोमल पौधे पर कुल्हाड़ा चलाया गया था। आसमान से आग बरसी थी; पर ये संयोग की बात थी कि, उसके प्यार की भावनाओं को छलने और लूटने वाला चाहे आकाश था या फिर क्षितिज; पर थे तो दोनों ही एक ही देश के वासी। एक अपनी विवशताओं के वश उसके आंचल में चाहकर भी खुशियां नहीं डाल सका था, तो दूसरे ने शायद जानबूझ कर उसे अपना मतलब पूरा होने के पश्चात जीवन से निकाल देना चाहा था? दोनों ही कृति के लिये अस्थिर साबित हुये थे। एक वक्त की मार के कारण, तो दूसरा अपने स्वार्थ के लिये उसको लूट कर चलता बना था।

फिर इस प्रकार किसी तरह से कृति ने ये आघात् भी सहा। दुनिया भर को बुरा भला कह कर अपने आपको झूठी तसल्ली देनी की कोशिश की। आकाश और क्षितिज दोनों ही को अपने दिल में बसाते हुये भी उनके प्रति नफरत और अलगाव के बीज बो लिये। एक बार फिर से उसकी आंखों के सामने उसके जीवन का घोर अंधियारा आकर ठहर चुका था। उसका जीवन नीरस ही नहीं बल्कि निरूद्देश्य भी साबित हो चुका था। अपने प्यार की बाजी उसने हारी ही नहीं थी बल्कि साथ में उसे बदनामी का ज़हर भी पीना पड़ गया था। इन सब बातों का प्रभाव उसके मन मस्तिष्क पर इसकदर गहरा पड़ा कि सारी पुरूष जाति से ही वह नफरत करने लगी। हरेक पुरूष में उसे भौंरे का स्वरूप और उसकी स्वार्थी प्रवृत्ति की पराई नियत दिखने लगी। जीवन में उसने ज़हर खाकर मरना चाहा तो युक्ति का जीवन और ममता सामने आ गई। तब वह किसी प्रकार से जीने लगी। खुद को समझाया। खुद को ही बुरा भला कह लिया और खुद में ही दोष लगा कर उसने अपने अतीत का ये कड़वा और काला पृष्ठ सदा के लिये

बंद कर दिया तथा जमाने की सारी बदनामी को अपने माथे पर कलंक समान लगाकर वह केवल युक्ति के लिये ही जीने लगी।

इस प्रकार से जब कृति के जीवन में उसके लिये आकाश पर कोई बादल नहीं रहा और क्षितिज भी डूब गया तो उसने वह शहर ही छोड़ दिया और राजधानी छोड़ कर बरेली शहर में आ गई। यही सोच कर कि जिस शहर में उसके जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा व्यतीत हुआ था और जिसने उसकी झोली भरने के बजाय जो कुछ उसमें था, उसे भी छीन लिया था, उसमें रह कर जीवन की शेष सांसे लेने का मकसद भी और क्या हो सकता था? न वह अब इस शहर में रहेगी और नाही यहां की कड़वी स्मृतियां उसे सता पायेंगीं।

बरेली स्थित विदेश विभाग के पासपोर्ट कार्यालय में आकर वह अपना कार्यभार संभाल कर रहने लगी। युक्ति को उसने पास ही के मिशन स्कूल में दाखिल करा दिया था, तथा इस प्रकार वह अपने बदन और आत्मा पर जीवन की एक अत्यंत कड़वी और कसैली स्मृति को चिपका कर फिर एक नये सिरे से जीने का प्रयास करने लगी थी। तब किसी प्रकार उसका जीवन फिर एक बार बगैर किसी भी हलचल के अपने मार्ग पर चुपचाप सरक रहा था कि तभी एक दिन अचानक से एक ऐसा मोड़ आया कि जिसने फिर एक बार उसको आगे बढ़ने से रोक दिया। राह चलते चलते उसके कदम ठिठके ही नहीं बल्कि उसके मन मस्तिष्क के अतीत में वर्षों से सोये तार फिर से झनझना उठे। जब एक दिन उसने आकाश को फिर से अपने घर के दरवाजे पर खड़ा हुआ देख लिया था। उस दिन वह युक्ति को पहली बार स्कूल से घर छोड़ने आया था। कृति को नहीं मालुम था कि आकाश भी बरेली ही शहर में रह रहा है। वह अपनी भतीजी को जब तब स्कूल ले जाता था और छोड़ भी आता था। आकाश की भतीजी युक्ति के साथ ही एक ही कक्षा और स्कूल में पढ़ा करती थी तथा वह युक्ति की मित्र भी थी। यही कारण था कि आकाश सबसे पहले युक्ति को उसके घर लेकर आ गया था, जो कृति से उसकी पुन भेंट हो जाने का कारण भी बना था।

तब आकाश को फिर से अपने सामने देख कर कृति के मन में ऐसी प्रतिकिया हुई कि जिसके कारण उसे ना तो खुशी हुई और ना ही कोई दुख। ये ऐसा संयोग था कि जिसकी बजह से वह ना तो रो सकी थी और ना ही हंस सकी थी। वर्षों पूर्व जिस मनुष्य को वह अपने जीवन से एक दिन मजबूरन निकाल आई थी और एक प्रकार से जिसके कारण ही वह जीवन की हरेक खुशियों

को तिनके तिनके करके हवा में बिखेर चुकी थी वही पुरूष जब फिर से उसकी आंखों के सामने आकर खड़ा हो गया तो मन और शरीर दोनों को तकलीफ तो होना स्वभाविक ही थी।

आकाश से इस प्रकार अचानक से हुई भेंट होने के कारण कृति के मन में जो कड़वाहट उसके प्रति भरी हुई थी, उसका प्रभाव इसकदर हुआ कि उसने उससे एक शब्द भी नहीं कहा। केवल आंखों के द्वारा ही छिटकाव की प्रवृत्ति जाहिर कर दी और युक्ति को घर के अंदर लेकर चुपचाप दरवाजा बंद कर लिया। आकाश पर उसके इस अभद्र व्यवहार से क्या बीती? उसने क्या सोचा और वह उसके दरवाजे पर कितनी देर तक खड़ा रहा? ये सारी बातें कृति ने जानने की आवश्यकता ही नहीं समझी।

कृति ने सोचा था कि आकाश उसके व्यवहार से समझ गया होगा कि उसके मन में उसके प्रति कैसे विचार और कैसा सम्मान है। और शायद अब वह कभी भी लौट कर उसके दरवाजे की ओर झांकेगा भी नहीं। मगर कृति की ये धारणा भी गलत ही निकली जब पिछले दिनों के समान आज भी जब उसने आकाश को युक्ति को स्कूल से लाते देख लिया तो वह उसे देखते ही गंभीर हो गई। वह फिर आज उसकी लड़की को लेकर आ रहा था। वास्तव में वह ये कभी भी नहीं चाहती थी कि अब आकाश उसके सम्पर्क में किसी भी तरह से आये या फिर उसकी पुत्री से कोई संबन्ध भी रखे। मगर ये उसकी शायद कमजोरी ही थी कि वह चाह कर भी उसे कभी भी मना नहीं कर सकी थी। आकाश से अब उसका क्या संबन्ध था? शायद कुछ भी तो नहीं? और शायद ऐसा बहुत कुछ कि जिसकी व्याख्या करने के लिये उसके पास शब्दों की कमी सदा ही बनी रही थी।

उसकी पुत्री स्कूल से तीन बजे आती थी। सो वह ढाई बजे ही से घर की खिड़की के पास आकर रिक्शे वाले को झांक झांक कर देख लिया करती थी। आज भी वह बड़ी देर से प्रतीक्षा कर रही थी, परन्तु जब उसने आकाश के साथ फिर से उसे आते हुये देखा तो देखते ही उसका सारा मूंड खराब हो गया था। अभी मुश्किल से दो सप्ताह पहले ही तो उसने युक्ति को आगाह किया था कि वह फिर कभी भी आकाश के साथ न आये। परन्तु बच्ची तो बच्ची थी, कब तक ध्यान रख सकती थी। युक्ति आकाश की भतीजी के साथ ही पढ़ा करती थी। दोनों एक ही उम्र और कक्षा में

थीं। इसलिये दोनों की मित्रता भी थी। इसलिये जब कभी आकाश अपनी भतीजी को लेने जाता था तो युक्ति के आग्रह पर उसे भी उसके घर छोड़ आता था।

हांलाकि, कृति ने युक्ति को स्पष्ट मना कर दिया था कि वह आकाश के साथ फिर कभी भी न आये, परन्तु आकाश का प्यार पाकर युक्ति क्षण भर में अपनी मां की सारी चेतावनी को भूल भी जाती थी। वह नहीं जानती थी कि उसकी मां का आकाश से क्या संबन्ध था या फिर है। क्यों वह उसके साथ आने को मना किया करती है? और मना करने के उपरान्त भी आकाश क्यों उसे इतना अधिक प्यार किया करता है? युक्ति के लिये ये ऐसे अनबूझे प्रश्न थे कि जिनके बारे में वह पूर्णत अज्ञान तो थी ही, साथ ही उसे कुछ अधिक सरोकार भी नहीं था। इसका भी कारण बच्चे का मन था। बिल्कुल साफ सुथरा। किसी भी बुराई और कठोरता से बिल्कुल परे। वह केवल इतना ही समझती थी कि आकाश की आंखों में उसके प्रति अपार अनुराग और स्नेह समाया हुआ है कि जिसके बारे में वह महसूस तो करती है, परन्तु अपनी मां से कभी भी जाहिर करने का उसका साहस नहीं होता था . . .'

सोचते सोचते कृति की आंखों से आंसुओं की लकीर स्वत ही उसकी उस पिघली हुई मोम की जिन्दगी के समान सरकने लगी कि जिसको वह पिछले कई सालों से तिल तिल करके हर पल गलाती आ रही थी। उसने सोचा कि, ये आदमी ! ये आकाश ! अब भी उसके पीछे क्यों पड़ा हुआ है? जब सब कुछ समाप्त हो चुका, सारा कुछ बिखर कर हवा में उड़ गया, तो फिर अब उसे बटोरने और जमा करने से लाभ भी क्या? विषय बंद नहीं हो सका तो क्या हुआ, समय तो समाप्त हो ही चुका है। विराम लगने के बाद फिर कोई भी कहानी, कोई भी सिलसिला आरंभ नहीं हुआ करता; भले ही बात अधूरी क्यों न रह गई हो?

सितारों से आगे चाहे कितने ही संसार क्यों न हों, मगर देखे किसने हैं? क्षितिज के उस पार आकाश हो या न हो? पर ये कौन जाने कि उसकी छत का साया उसकी इकलौती बच्ची युक्ति के लिये सुरक्षित भी रहेगा? उस स्थिति में जब कि आकाश उसके घर और जीवन में पहले ही छाया करने में असफल रहा है। किसी ने सच ही तो कहा कि, कच्ची उम्र की खेती और भावुकता के बहाव में सजाये हुये सपने; दोनों ही में कोई भी स्थिरता नहीं होती है। और इन दोनों ही बातों का उसे खूब अच्छी तरह से अनुभव हो चुका है। इसलिये अब वह ऐसा और कोई भी काम नहीं

करेगी कि जिसके कारण से उसकी काली छाया उसकी बच्ची के जीवन पर पड़ती रहे। मनुष्य का जीवन सचमुच में यदि प्यार का प्यासा पंछी होता तो वह बजाय इधर उधर उड़ते और भटकते रहने के कहीं किसी नीड़ में बैठ कर चाहतों और हसरतों की दुनियां नहीं सजा रहा होता? प्यार की कहानी का लोग कोई अफसाना बनायें, इससे तो बहतर है कि उसे किसी हसीन मोड़ पर लाकर समाप्त ही कर दिया जाये। अगला सत्र आरंभ होते ही वह अपनी बच्ची का स्कूल ही बदल देगी।

समाप्त।